8

''मनुष्य के पुत्र सा कोई''

(1:9-17, 20)

एक रात, जब दानिय्येल बाबुल में एक बूढ़ा आदमी था, उसे एक दर्शन मिला था। उसने देखा ''अति प्राचीन'' (दानिय्येल 7:9) चार भयंकर जीवों का न्याय करता है और फिर उसने ''मनुष्य के पुत्र सा कोई'' देखा। बाद में उसने लिखा,

> मैं ने रात में स्वप्न में दे ा, और दे ो, मनुष्य के सन्तान सा कोई आकाश के बादलों समेत आ रहा था, और वह उस अति प्राचीन के पास पहुंचा, और उसे वे उसके समीप लाए। तब उसको ऐसी प्र ुता, महिमा और राज्य दिया गया कि देश-देश और जाति-जाति के लोग और ि न्न-ि न्न ाषा बालने वाले सब उसके अधीन हों; उसकी प्र ुता सदा तक अटल, और उसका राज्य अविनाशी ठहरा (दानिय्येल 7:13, 14)।[1]

जब दानिय्येल ने ''मनुष्य के पुत्र सा कोई'' देखा तो वह घबरा गया और चौकस हो गया (दानिय्येल 7:15)। उसके छह सौ साल बाद, एजियन सागर के एक छोटे से टापू पर, एक और आदमी ने ''मनुष्य के पुत्र सा कोई'' देखा (प्रकाशितवाक्य 1:13)[2]; और उसे देखकर वह ''उसके पैरों पर मुर्दा सा'' होकर बेहोश हो गया (1:17)। यह ''मनुष्य का पुत्र'' कौन है, और उसे देखने वालों पर वह ऐसा प्रभाव क्यों डालता है?

इस पाठ में, हम प्रकाशितवाक्य 1:9-20 का अध्ययन आर भ करेंगे। इन आयतों में, यूहन्ना ने लिखने के लिए दी गई उस आज्ञा के बारे में बताया, परन्तु उसने इससे भी अधिक किया। उसने अपने पहले दर्शन का वर्णन करते हुए ''मनुष्य के पुत्र सा कोई'' लिखा। वह दर्शन शेष पुस्तक के लिए आधार है। यदि हम प्रकाशितवाक्य को समझाना चाहते हैं, तो हमें दानिय्येल और यूहन्ना द्वारा दिखाए गए उस दर्शन का पता होना आवश्यक है। यदि हम प्रकाशितवाक्य के संदेश से आशीष पाना चाहते हैं तो हमें भी उसके सामने गिरकर झुकना आवश्यक है।

यूहन्ना ने क्या सुना (1:9-11)

यूहन्ना ने इन शब्दों के साथ लिखना आर भ किया, ''मैं यूहन्ना जो तु हारा भाई'' (आयत 9क) उसने अपने पाठकों को अपने प्रेरित होने या अधिकार का स्मरण नहीं दिलाया; उसने अपने आप को केवल उनका भाई बताया।

उसने अपने आप को ''यीशु के क्लेश, और राज्य और धीरज में तु हारा सहभागी'' कहा (आयत 9ख)। ''सहभागी'' यूनानी शब्द से अनुवाद किया गया है, जिसका अर्थ है ''के साथ बांटना'' या ''साझे का होना'' यूहन्ना अपने पाठकों के साथ तीन तरह से ''सहभागी'' था: क्लेश में, राज्य में और धीरज में। ये ''तीनों प्रकाशितवाक्य के मु य विषय''[3] पहली शताब्दी के मसीही लोगों के जीवन का भाग थे।

क्लेश उस कष्ट को कहा गया है, जिसमें से मसीही लोग गुज़र रहे थे। अनुवादित शब्द ''क्लेश'' का मूल अर्थ ''दबाव'' था, परन्तु नये नियम में इसे ''घटनाओं का दबाव जो कि सताव है'' के विवरण के लिए इस्तेमाल में होने लगा।[4]

मसीही लोग सताए जा रहे थे, वे *राज्य* में थे। दानिय्येल की भविष्यवाणी वाले ''मनुष्य के पुत्र सा कोई'' को राज्य दे दिया गया था। यह भविष्यवाणी तब पूरी हुई जब यीशु परमेश्वर के पास उठाया गया था और ''परमेश्वर के दाहिने हाथ'' बैठ गया (प्रेरितों 2:32-36)। फिर यीशु ने पृथ्वी पर अपने राज्य को स्थापित करने के लिए पवित्र आत्मा भेजा (प्रेरितों 2:1-4; देखें प्रेरितों 1:6-8)। उस राज्य को कलीसिया के रूप में जाना जाता था (मत्ती 16:18, 19) और यूहन्ना और उसके पाठक इसमें सहभागी थे (1:6, 11)।[5] उनकी वफ़ादारी सम्राट डोमिशियन की ओर न होकर राजा यीशु के साथ होने के कारण सताव या क्लेश होना स्वाभाविक था (यूहन्ना 16:33; प्रेरितों 14:19)।

राज्य के लोगों को *धीरज*[6] की आवश्यकता है जो उनके क्लेशों के बावजूद स्थिर रहने की योग्यता है (प्रकाशितवाक्य 14:12; मत्ती 24:13; 2 तीमुथियुस 2:12)। यह बात कि वे ''सहभागी'' के उन्हें स्थिर रहने में सहायक; बोझ बांटने से हल्का हो जाता है यह बात कि वे ''यीशु में'' थे भी सहायता करेगी। ''यीशु में'' वह शब्द है जिसे मसीह लोगों के यीशु के साथ विशेष स बन्ध बताने में सहायता मिलेगी (रोमियों 16:3; 1 कुरिन्थियों 1:2)। यूहन्ना के पाठकों को यीशु में बपतिस्मा दिया गया था (गलातियों 3:26-28) और उसी में वे आगे बढ़ने की सामर्थ पा सकते थे।

यूहन्ना ने उन्हें बताया कि वह *शारीरिक रूप से* कहां था, जब उसे लिखने का आदेश मिला। वह ''परमेश्वर के बचन और यीशु की गवाही के कारण पतमुस नाम टापू में था[7]'' (आयत 9ग)। पतमुस रोमी कैद के रूप में इस्तेमाल किया जाने वाला ''एक निर्जन इलाका था।[8]''

यूहन्ना निर्वासन में ही था क्योंकि उसने परमेश्वर के वचन का दृढ़ता से प्रचार किया था और यीशु की अपनी गवाही देने से मुकरने से इनकार कर दिया था।[9] रोमी सरकार ने उसे खामोश करने के लिए पतमुस में भेज दिया, परन्तु प्रभु उसे एक नई शक्तिशाली आवाज़ देने वाला।

यूहन्ना ने फिर अधिक महत्वपूर्ण विषय बताया कि जहां वह *आत्मिक रूप में* था, जब उसे लिखने के लिए कहा गया: ''मैं प्रभु के दिन आत्मा में आ गया'' (आयत 10क)। पहले ''प्रभु के दिन'' वाक्यांश को देखें।[10] यूनानी शब्द का अनुवाद ''प्रभु के'' किसी चीज़ के ''प्रभु का'' होने को कहने का विशेष ढंग है।[11] यह शब्द नये नियम में केवल दो

बार मिलता है, एक बार यहां और एक बार 1 कुरिन्थियों 11:20 में जहां ''प्रभु भोज'' की बात की गई है। कलीसिया के आरंभिक दिनों से ही,[12] ''प्रभु का दिन'' शब्द का इस्तेमाल सप्ताह के पहले दिन के लिए और केवल सप्ताह के पहले दिन के लिए[13] जिस दिन यीशु मरे हुओं में से जी उठा था, किया जाता था (मत्ती 28:1; लूका 24:1)। आज हम *प्रभु* के दिन *प्रभु* के भोज में भाग लेते हैं (प्रेरितों 20:7)।

फिर, ''आत्मा में आ गया'' वाक्यांश देखें। 4:2 में इसी शब्द का इस्तेमाल हुआ है। दोनों जगह, मूल अनुवाद, ''मैं आत्मा में आ गया'' होगा। 4:2 में ''आत्मा में'' यूहन्ना की आत्मा के पवित्र आत्मा को ग्रहण करने को कहा गया है,[14] और स भवतया इसका अर्थ 1:10 वाला ही है।[15] ''प्रभु के दिन'' यूहन्ना की स्थिति की किसी बात ने उसे प्रभु के प्रकाशन को ग्रहण करने के लिए तैयार कर दिया।[16] क्योंकि प्रभु का दिन आराधना का दिन है, इसलिए वह ''कुछ'' यूहन्ना का आराधना का अनुभव ही होगा। मेरे मन में इसकी तस्वीर इस प्रकार है।

यूहन्ना सप्ताह के पहले दिन जल्दी उठ गया, जैसे वह पिछले छह साल से उठ रहा था। सूरज चढ़ने तक, वह एक पथरीली परत पर बैठकर पूर्व की ओर नीले पानी पर देख रहा था। लहरों के नीचे पत्थर पर टकराने से उसके मुंह पर पानी की एक फुहार पड़ी, पर उसके विचार समुद्र पर थे, जहां उसके भाई आराधना के लिए इकट्ठे हो रहे थे। अपने प्रियों के चेहरे याद करने पर उसकी आंखों में आंसू आ गए। वह उन्हें प्रार्थना करते, रोटी तोड़ते और गीत गाते देख सकता था। वहां, उस एकांत में उसने बूढ़ी और फटी हुई, परन्तु जज़्बात से भरी हुई आवाज़ उठाई: ''और हमें एक राज्य और अपने पिता परमेश्वर के लिए याजक भी बना दिया; उसी की महिमा और पराक्रम युगानुयुग रहे। आमीन'' (आयत 6)।

अचानक लगा जैसे भूमि उसके पांव तले धंसी जा रही थी। क्षितिज पीछे हट गया। यूहन्ना को लगा, जैसे समय और स्थान अंतरिक्ष के बंधनों से मुक्त हो गया। वह अपने आस पास के भौतिक संसार के स पर्क से निकल गया। वह ''आत्मा में'' था। उसने *देखा,* परन्तु सांसारिक आंखों से नहीं। वह सीधे अपने उद्धारकर्त्ता के आत्मिक स पर्क में था।[17]

फिर यूहन्ना का ध्यान अपने पीछे एक बहुत ऊंची आवाज़, उस आवाज़ में घिर गया जो बिल्कुल स्पष्ट और आज्ञा देने वाली ''तुरही का सा शब्द[18]'' करने वाली आवाज़ में घिर गया (आयत 10ख)।[19] आवाज़ ने कहा,[20] ''जो कुछ तू देखता है, उसे पुस्तक में लिखकर[21] सातों कलीसियाओं के पास भेज दे, अर्थात इफिसुस और स्मुरना, और पिरगमुन, और थूआतीरा, और सरदीस, और फिलदिलफिया, और लौदीकिया, में''[22] (आयत 11)। इफिसुस की कलीसिया में बीस से अधिक सालों से यूहन्ना आराधना कर रहा था, और वह अन्य स्थानों के भाइयों को जानता था, जिनका नाम दिया गया।

यूहन्ना ने क्या देखा (1:12-16, 20)

उस घोषणा से इस प्रेरित को एक बात याद आई जो उसने कई साल से नहीं सुनी थी। यूहन्ना ने कहा, ''और मैंने उसे जो मुझ से बोल रहा था''[23] (आयत 12क)। फिर उसने

मुड़कर, उस मित्र को पहचान लिया जिसे उसने छह दशक से नहीं देखा था, पर उसने उसे ऐसे पहले कभी नहीं देखा:

> देखने के लिए अपना मुंह फेरा; और पीछे घूमकर मैंने सोने की सात दीवटें देखीं। और उन दीवटों के बीच में[24] मनुष्य के पुत्र सरीखा एक पुरुष को देखा, जो पांवों तक का वस्त्र पहिने, और छाती पर सुनहला पटुका बान्धे हुए था। उसके सिर और बाल श्वेत ऊन बरन पाले के से उज्ज्वल थे; और उसकी आंखें आग की ज्वाला की नाईं थीं। और उसके पांव उत्तम पीतल के समान थे जो मानो भटठी में तपाए गए हों; और उसका शब्द बहुत जल के शब्द की नाईं था। और यह अपने दहिने हाथ में सात तारे लिए हुए था: और उसके मुख से चोखी दोधारी तलवार निकलती थी; और उसका मुंह ऐसा प्रज्वलित था, जैसा सूर्य कड़ी धूप के समय चमकता है (आयतें 12ख-16)।

यूहन्ना यीशु को अपनी पूरी महिमा में आंखें फाड़कर देख रहा था,[25] जिसे दानिय्येल केवल ''मनुष्य के पुत्र सा कोई'' के रूप में ही जानता था!

मैंने पहले कहा था कि प्रत्येक दर्शन में आकर, हम उस दर्शन के पूरे संदेश को खोजने की पूरी कोशिश करेंगे। फिर हम यह देखने के लिए कि वह उन्हें यह संदेश कैसे समझ आया, विस्तार से सतीक्षा करेंगे। अन्त में कहीं हम दृश्य के मु य उद्देश्य को न भूल जाएंगी, इसके लिए इसकी स पूर्णता को एक बार फिर से देखेंगे।[26] पुस्तक के इस पहले दर्शन में इसी ढंग का इस्तेमाल करेंगे।

इस दर्शता तथा उसके बाद की घटनाओं की तस्वीर बनाने का प्रयास करते हुए, याद रखें कि वे दर्शन हैं, वास्तविकता नहीं। यूहन्ना जाग रहा था, पर जो दर्शन उसने देखे वे स्वप्न जैसे थे: आकार बदलते रहते; सामंजस्य अक्सर अप्रासंगिक होता है; अस भाव्यताएं अपवाद न होकर नियम हैं।[27] उदाहरण के लिए इस दर्शन में, यीशु अपने हाथ में सात तारे लिए हुए कैसे हो सकता था (1:16; 2:1)? तारे तो हमारे सूर्य की तरह गरम गैसों से बने होते हैं, और हर तारा या तो हमारे सूरज जितना या उससे बड़ा है! इसके अलावा यीशु के दाहिने हाथ में तारे और उसी समय यूहन्ना पर हाथ रखा कैसे जा सकता था (1:17)? इन प्रश्नों का कोई उत्तर नहीं है और न ही उनका कोई तुक है। दर्शन में कुछ भी हो सकता है।

प्रकाशितवाक्य पर सिखाते समय, मैं आम तौर पर छात्रों को दर्शन को पूरा देखने और उसकी बातों की समीक्षा में सहयता के लिए प्रत्येक दर्शन का रेखाचित्र बनाता हूं। इसके साथ ही, मैं इस बात पर ज़ोर देता हूं कि प्रकाशितवाक्य के दर्शनों को बोर्ड पर चाक से, कागज पर सियाही से या कपड़े पर पेंट से बनाने वाला कोई कलाकार पैदा नहीं हुआ है। यूहन्ना के दर्शनों पर चर्चा करते हुए, हमें उनके सार को समझने की आवश्यकता है, न कि उनके विवरणों पर ध्यान रखने की। आइए इस पहले दर्शन पर विचार करते हैं।

स पूर्ण दर्शन

मुड़ने पर, यूहन्ना पहले तो उस महिमा से अति प्रभावित हो गया था और जो कुछ उसने देखा उसकी चमक से लगभग अंधा ही हो गया। नज़र टिक जाने पर उसे रोशनियों का एक चक्र अर्थात शुद्ध सोने की सात दीवटों पर रखे टिमटिमाते दीये दिखाई दिए। फिर यूहन्ना ने उन दीवटों के बीच में चलती हुई एक आकृति देखी,[28] जिसका रूप देखकर यूहन्ना कांप गया। उसने राजाओं वाला ल बा सा ''छाती पर सोने का पटुका'' बांधा हुआ था। एक हथेली पर सात चमकते हुए तारे थे। यूहन्ना ने उसके पांव की एक झलक पाई: पांव पीतल की तरह ''जो मानों भट्ठी में तपाया गया हो'' थे।[29] जिधर भी वह आदमी जाता, वह अपने सुलगते हुए पदचिह्नों की छाप छोड़ जाता।

परन्तु यूहन्ना की आंखें उस मनुष्य के चेहरे पर लगी हुई थीं। उसके बाल चमकती धूप में चमकने वलाी बर्फ की तरह इतने सफेद हो गए थे कि उसकी आंखें चुंधिया गईं। उस मनुष्य ने यूहन्ना की ओर देखा और ''उसकी आंखें आग की ज्वाला के समान [चमकीं]।'' उसने यूहन्ना *की* ओर केवल देखा ही नहीं बल्कि उसने उस *में* देखा! जब उसने अपने होंठ खोले, तो उसकी आवाज़ ''बहुत जल के शब्द के समान'' थी। फिर, उसके मुंह से एक तेज दोधारी तलवार निकली।[30] अचानक उस मनुष्य का चेहरा दोपहर के सूरज की तरह चमक गया और यूहन्ना को अपनी आंखें दूसरी ओर करनी पड़ीं।

इस दृश्य से आप पर क्या असर हुआ? जो प्रभाव मुझ पर पड़ा, वह बताने से पहले, आप अपनी प्रतिक्रिया के बारे में विचार करने के लिए कुछ पल बिताएं। वापस जाकर, 12 से 16 आयतें फिर पढ़ें, और फिर उस दृश्य का मेरा संस्करण दोबारा पढ़ें।

क्या आपने ऐसा किया? आपके मन में उस दर्शन के बारे में विचार करते हुए क्या शब्द आए? महिमा? तेज? पवित्रता? ये तथा इनके जैसे शब्द बहुत ही उपयुक्त हैं। क्या आपके मन में ''सामर्थ'' शब्द आया?[31] मेरे लिए, तो यह विवरण पुकारकर कहता है कि ''मनुष्य के पुत्र सदृश्य यह व्यक्ति सामर्थी है!'' उसके वस्त्र से एक बात की घोषणा होती है कि उसके पास शासन करने की सामर्थ है। उसकी गरजती आवाज कहती है कि उसमें आज्ञा देने की सामर्थ है। उसकी गढ़ी हुई आंखें ऐलान करती हैं कि उसमें जानने की सामर्थ है। उसके जलते पांव और उसके मुंह से निकलती तलवार इस बात की घोषणा करते हैं कि उसके पास दण्ड देने की सामर्थ है।

दृष्टांत का विवरण

आम तौर पर किसी दृष्टांत का विवरण बहुत कम होता है या उसका अपने आप में कोई महत्व नहीं होता, पर अध्याय 1 वाले दृष्टांत, के विवरण महत्वपूर्ण हैं। सात कलीसियाओं के नाम पत्रों में, यीशु की तस्वीर (2:1, 8, 12, 18; 3:1, 7) मु यतया इसी दृष्टांत से बनाई गई है और प्रत्येक चित्रण का स बन्ध सीधे तौर पर स बन्धित मण्डली की आवश्यकता से है।[32] इसलिए हमें सामान्य से बढ़कर इस दृष्टांत के प्रत्येक भाग पर अधिक ध्यान देने की आवश्यकता है।

हम वहीं से आर भ करेंगे जहां से यूहन्ना ने किया, अर्थात ''सोने की सात दीवटों'' से (आयत 12ख)। यह हमें वेदी के सात शाखाओं वाले दीवट का स्मरण दिलाता है (निर्गमन 25:31, 32), परन्तु वहां एक घुमाव है। (हमेशा घुमाव को ढूंढ़ें।) ये सात अलग-अलग, स्वतन्त्र खड़े दीवट थे।[33] आयत 20 में यीशु ने कहा कि ''सात दीवट सात कलीसियाएं हैं,'' आसिया की सात मण्डलियां।

कलीसिया दीपक नहीं, बल्कि दीवट अर्थात वे स्त भ थीं जिन पर दीपक रखे जाते थे (देखें मत्ती 5:15)। यीशु स्वयं ज्योति है (यूहन्ना 8:12)। मसीही लोग उस ज्योति को प्रतिबिंबित करते हैं (मत्ती 5:14-16; फिलिप्पियों 2:15) और कलीसिया का काम संसार के देखने के लिए उस ज्योति को स भालना है (इफिसियों 3:21)।[34]

दीवट सोने के अर्थात बहुमूल्य घातु के बनाए गए थे। यीशु की कलीसिया बहुमूल्य है (प्रेरितों 20:28; इफिसियों 5:23, 25)। इस पर विचार करें: दीवट सात वास्तविक मण्डलियां थीं और उन में से कुछ निर्धन, दुर्बल और समस्या से ग्रस्त थीं। तौ भी उनका *एक उद्देश्य* था (सुसमाचार के प्रकाश को थामे रखना), और वे अभी भी यीशु के लिए *बहुमूल्य* थीं![35] जहां आप आराधना करते हैं वह कलीसिया चाहे कितनी भी छोटी क्यों न हो, यदि यह प्रभु की विश्वासी है, तो उसकी नज़र में यह सोने से भी मूल्यवान है!

फिर, यूहन्ना ने ''उन दीवटों के बीच में'' यीशु को देखा (आयत 13क)। पहली शताब्दी के मसीही लोगों को लगता होगा कि उन्हें छोड़ दिया गया है, परन्तु यीशु उनके बीच में था (देखें मत्ती 18:20; 28:20)। मण्डलियां अपने आप को अकेले और असुरक्षित समझती होंगी, परन्तु यीशु उन के ''बीच में'' था (आयत 13क)। यीशु कलीसिया का एक करने वाला सिद्धांत और इसकी सामर्थ था (और है)।

आज, बहुत से लोग यीशु को उस जगह छोड़कर जहां वह मिल सकता है, हर जगह ढूंढ़ रहे हैं। वे उसे करिश्माई अगुओं में, मनुष्यों की बनाई हुई संगतियों में, और ''नये युग'' के रहस्यवाद में ढूंढ़ रहे हैं। यदि आप यीशु को ढूंढ़ना चाहते हैं, तो उसे उसकी कलीसिया में देखें। यदि आप वहां होना चाहते हैं जहां यीशु है, तो उसके लोगों के साथ आराधना करें।

यूहन्ना यीशु को ''मनुष्य के पुत्र सरीखा एक पुरुष''[36] (आयत 13ख; 14:14) कहकर उसका वर्णन करने लगा। पृथ्वी पर यीशु की सेवकाई के दौरान, अपने लिए उसका पसंदीदा शब्द ''मनुष्य का पुत्र'' था (उदाहरण के लिए, मत्ती 8:20)। ये शब्द सुसमाचार के वृत्तांतों में 80 से अधिक बार मिलता है। इसमें मसीहा का स्वर था (दानिय्येल 7:13)। पहले हम यीशु के वस्त्र का वर्णन देखते हैं: वह ''पांवों तक का वस्त्र पहिने, और छाती पर सुनहला पटुका बान्धे हुए था'' (आयत 13ग)। उसका वस्त्र साधारण मनुष्य का नहीं बल्कि शाही वस्त्र था (देखें यशायाह 6:1)।[37]

फिर, यूहन्ना ने यीशु पर ध्यान दिया: ''उसके सिर और बाल श्वेत ऊन बरन पाले के से उज्ज्वल थे'' (आयत 14क; देखें दानिय्येल 7:9)। उसके बालों का सफेद होना पवित्रता तथा शुद्धता का संकेत है (यशायाह 1:18); यह उम्र की समझ का संकेत भी हो सकता है (नीतिवचन 16:31)।

''उसकी आंखें आग की ज्वाला की नाईं थीं'' (आयत 14ख; देखें दानिय्येल 10:6)। ''जिससे हमें काम है, उसकी आंखों के सामने सब वस्तुएं खुली और बेपरद हैं'' (इब्रानियों 4:13; देखें भजन संहिता 139:1-4)।

''उसके पांव उत्तम पीतल के समान थे[38] जो मानो भट्ठी में तपाए गए हों'' (आयत 15क; देखें दानिय्येल 10:6; यहेजकेल 1:7)। मीका 4:13 में सिय्योन की पुत्री को कांस्य के ''पांव'' दिए गए, ताकि वह ''बहुत सी जातियों को चूर चूर'' कर सके। प्रकाशितवाक्य 1 अध्याय के चिह्नात्मक शब्द ''दुष्टों को लताड़'' कर उन्हें ''[अपने] पांवों के नीचे की राख'' बनाने की क्षमता की बात की गई है (मलाकी 4:3)।

''उसका शब्द बहुत जल के शब्द की नाईं था'' (आयत 15ख; देखें दानिय्येल 10:6; यहेजकेल 43:2)। उस का शब्द पतमुस के पथरीले तट पर लगती समुद्र की लहरों की तरह शक्तिशाली और प्रतापवान था। जब प्रभु बात करता है, तो लोगों को उसकी सुननी चाहिए।

''और यह अपने दाहिने हाथ में सात तारे लिए हुए था'' (आयत 16क)। दाहिना हाथ सामर्थ का हाथ है (निर्गमन 15:16)। भजन लिखने वाले ने परमेश्वर के लिए गाया था, ''मुझे तो तू अपने दाहिने हाथ से थाम रखता है'' (भजन संहिता 63:8)। यीशु के दाहिने हाथ में उन्हें थामे रखने और सुरक्षित रखने के लिए सात तारे थे।

यीशु ने बाद में उन सात तारों का अर्थ ''सातों कलीसियाओं के दूत'' बताया (आयत 20), परन्तु इस व्या या से उत्तर से अधिक प्रश्न उत्पन्न हो गए हैं। ''दूत'' एक तिरछा किया हुआ यूनानी शब्द है[39] जिसका सीधा सा उत्तर ''दूत'' है। यह कोई सांसारिक दूत भी हो सकता है (मलाकी 3:1; मत्ती 11:10) और स्वर्गीय दूत भी (लूका 2:9)[40] परन्तु संदर्भ से ही पता चलना चाहिए कि इसका अर्थ क्या है।

सात तारों/दूतों की हर व्या या की अपनी कठिनाइयां हैं। शेष प्रकाशितवाक्य में, ''दूत'' हमेशा स्वर्गीय दूत ही है, सो अध्याय 1 से 3 में इसके इसी अर्थ को प्राथमिकता दी जानी चाहिए-परन्तु इस व्या या से भी प्रश्न खड़े होते हैं: अध्याय 2 और 3 में स्वर्गदूतों को क्यों स बोधित किया गया है और उन्हें मण्डली के पापों के लिए जि मेदार क्यों ठहराया गया है?[41] इसके अलावा, यीशु किसी दूत को (22:16) वह संदेश देकर यूहन्ना को देने के लिए क्यों भेजता जो उसने स्वर्गदूतों के लिए लिखना था (2:1, 8)?

बहुत से लोग यह सोचते हैं कि ये सांसारिक दूत थे,[42] शायद कलीसियाओं के प्रतिनिधि, जिन्हें यूहन्ना को उसके निर्वासन के समय मिलने के लिए भेजा गया था। हम फिर पूछते हैं, यीशु ने पत्रों में इन लोगों को क्यों स बोधित किया और मण्डलियों के पापों के लिए उन्हें जि मेदार क्यों ठहराया? निजी तौर पर, मुझे कलीसिया के *प्राचीनों* के वे दूत होने का विचार पसन्द है, जो इब्रानियों 13:17 के अनुसार उन मण्डलियों के लिए जि मेदार *हैं*, जिनकी वे सेवा करते हैं। परन्तु हमें प्रत्येक मण्डली में केवल *एक* प्राचीन को स बोधित किए जाने की समस्या है (2:1, 8)।[43]

कुछ लोग यह कहते हुए कि दूत मण्डलियों की *आत्मा* का प्रतिनिधित्व करते हैं मूल

दूतों में पाई जाने वाली समस्या से बचने का प्रयास करते हैं। इस व्याक्या की समस्या यह है कि इसका अर्थ है कि यीशु ने सांकेतिक भाषा को समझाने के लिए संकेतों का इस्तेमाल किया।

मैंने एक सिद्धांत पर ज़ोर देने के लिए जिस पर प्रकाशितवाक्य के अपने अध्ययन में हमें ज़ोर देने की आवश्यकता है सात तारों की पहली पर चर्चा में काफ़ी समय बिताया है: यद्यपि हम पक्का नहीं जान सकते कि तारे कौन (या क्या) हैं, *तौ भी हम यीशु की बात को पूरी तरह से नहीं समझ सकते।* अध्याय 2 में देखें: आयत 1 में यीशु ने ''इफिसुस की कलीसिया *के दूत* '' को स बोधित किया, परन्तु आयत 7 में उसने सब सुनने वालों को आज्ञा दी ''कि आत्मा *कलीसियाओं से* क्या कहता है।'' तारे/दूत जो भी थे, वे *कलीसियाओं* के प्रतिनिधि थे इसका अर्थ यह हुआ कि वे उन कलीसियाओं के सदस्य थे। फिर 1:16 में गूढ़ अर्थ वाली भाषा का अर्थ यह होना चाहिए कि यीशु के हाथ में *विश्वासी* हैं, और कोई मनुष्य (या सरकार) ''उन्हें छीन''[44] नहीं सकता (यूहन्ना 10:28; देखें 2 तीमुथियुस 1:12)। क्या *वह* संदेश यह जानने से कि वे तारे कौन (या क्या) थे यह अधिक महत्वपूर्ण नहीं है?

यीशु के विवरण में कुछ और बातें भी हैं। हम पढ़ते हैं, ''... और उसके मुख से चोखी दोधारी तलवार निकलती थी'' (आयत 16ख)। क्योंकि परमेश्वर के वचन को कई बार तलवार कहा गया है (इब्रानियों 4:12; इफिसियों 6:17),[45] और तलवार यीशु के मुंह से निकलती थी। इसलिए निश्चय ही यह परमेश्वर का वचन है। इसे सुसमाचार की खुशखबरी न समझें; यह तो अपने शत्रुओं पर *न्याय* का प्रभु का वचन था (देखें यशायाह 49:2)। अध्याय 2 में, झूठे शिक्षकों के स बन्ध में, उसने कहा, ''मैं ... अपने मुख की तलवार से उन के साथ लड़ूंगा'' (आयत 2:16ख; देखें 19:15, 21)।

अन्त में, यूहन्ना ने लिखा, ''उसका मुंह ऐसा प्रज्वलित था, जैसा सूर्य कड़ी धूप के समय चमकता है'' (आयत 16ग)। रूपक दोपहर के समय सूर्य के चमकने का है। हमें रूपांतर का स्मरण आता है, जब यीशु का मुंह ''सूर्य के समान चमका'' (मत्ती 17:2)। जो पहाड़ पर अल्पकालिक था।, वह स्वर्ग में स्थाई बन गया था।

फिर से पूरा दर्शन

अब हम पीछे जाकर फिर से उस पूरे दर्शन को देखने के लिए तैयार हैं। क्या उसके भागों की समीक्षा करने से आपके मन में उस दर्शन के स पूर्ण प्रभाव के बारे में कुछ अतिरिक्त विचार आए? जब मैंने 12 से 16 आयतों पर पहली बार विचार किया था, तो मेरे मन में मु य विचार ''सामर्थ'' ही आया था; पर दर्शन का अध्ययन जारी रखते हुए, मैंने फैसला किया कि मुझे उस विचार को विस्तार देना चाहिए। उन प्रतीकों में दिखाई गई सामर्थ में सकारात्मक और नकारात्मक दोनों प्रकार की शक्ति थी। उदाहरण के लिए आयत 16 के रूपक को ही लें: तलवार या तो दण्ड दे सकती है या बचाव कर सकती है, और सूर्य जला भी सकता है और आशीष भी दे सकता है, घाव भी दे सकता है और चंगा भी कर

सकता है (देखें भजन संहिता 84:11; मलाकी 4:2)।

मैं फिर से उस दर्शन का उद्देश्य बताना चाहता है: यीशु में *जानने* और फिर उस ज्ञान को *काम में लाने* की सामर्थ है। यानी यीशु के पास *जानने* की सामर्थ थी यह दर्शन से स्पष्ट है: वह कलीसियाओं के बीच में था, सो उसे मालूम था कि क्या हो रहा है। उसकी आंखें सब कुछ देखती थीं। उसके पास अपने ज्ञान को *काम में लाने* की सामर्थ से यह भी स्पष्ट है: वह दण्ड देने (अपने पांवों और अपनी तलवार से) के लिए तैयार था और वह बचाव करने के लिए (अपने शक्तिशाली दाहिने हाथ से) तैयार था। अब 2 और 3 अध्यायों में दर्शन की प्रासंगिकता देखें: उन अध्यायों में यीशु को जो *जानता है* के रूप में दिखाया गया है (2:2, 9, 13), परन्तु वह जो कुछ जातना है उसका *कुछ कर* भी सकता है (2:5, 10, 11, 16, 17)।

मेरा निष्कर्ष यह है कि उस दर्शन में पहली सदी के मसीही लोगों के लिए संदेश था कि प्रभु अपने लोगों की ओर से कार्य करने को *तैयार, इच्छुक और सक्षम* था। इक्कीसवीं शताब्दी के मसीही लोगों के लिए संदेश है कि वह *अभी भी* तैयार है! ''यहोवा परमेश्वर मेरी ज्योति और मेरा उद्धार है; मैं किस से डरूं? यहोवा मेरे जीवन का दृढ़ गढ़ ठहरा है, मैं किस का ाय ाऊं?'' (ाजन संहिता 27:1)।

यूहन्ना ने जो महसूस किया (1:17)

यूहन्ना ने उस दर्शन के लिए क्या प्रतिक्रिया दी? उसने लिखा, ''जब मैंने उसे देखा, तो उसके पैरों पर मुर्दा सा गिर पड़ा'' (आयत 17क)। यूहन्ना आराधना के लिए नहीं गिरा था;[46] बल्कि डर कर, वह यीशु के कदमों में मूर्छित हो गया था। यीशु को उस पर अपना हाथ रखकर यह कहना पड़ा था, ''मत डर'' (आयत 17ख)।

यूहन्ना यीशु के निकटतम मित्रों में से था। जब चेले खाने के समय यीशु पर झुके हुए थे, तो यूहन्ना प्रभु के दाहिनी ओर ''यीशु की छाती की ओर झुका हुआ'' था (यूहन्ना 13:23)। वह प्रभु का वह चेला था ''जिससे यीशु प्रेम रखता था'' (यूहन्ना 13:23)-तौ भी जब उसने यीशु को अपनी पूरी महिमा में देखा, तो उसने यह नहीं कहा, ''मेरे मित्र, तुझे फिर देखकर अच्छा लगा!'' बल्कि, उस ईश्वरीय झलक को पाने वाले अन्य लोगों की तरह, वह ऐसे गिर गया जैसे किसी ने उसके सिर पर चोट मारी हो (यशायाह 6:5; यहेजकेल 1:28; 3:23; 43:3; दानिय्येल 8:17, 27; 10:8-10; मत्ती 17:6; लूका 5:8; प्रेरितों 26:14)।

यूजीन पीटरसन ने प्रकाशितवाक्य को ''मसीह का अन्तिम वचन'' कहा और लिखा कि ''अन्तिम वचन महिमापूर्ण है, मनुष्य के पुत्र का दानिय्येल वाला दर्शन।''[47] आज अधिकतर लोग चरनी में जन्मे उस बालक से परिचित हैं, जो बड़ा होकर एक महान शिक्षक और चंगाई देने वाला बना। कइयों ने उसे जो क्रूस पर मरा था और फिर मरे हुओं में से जी उठा था, सुना है। परन्तु बहुत कम लोग उस महिमा पाने वाले से परिचित हैं जो ''परमधन्य और अद्वैत अधिपति और राजाओं का राजा, और प्रभुओं का प्रभु है'' (1

तीमुथियुस 6:15ख; देखें प्रकाशितवाक्य 17:14; 19:16)।

परमेश्वर की उपस्थिति में आने पर हमें चरमों से बचना चाहिए। एक ओर तो भय से नि:सहाय हो जाने पर हमें उन बच्चों की निकटता का कभी पता नहीं चल पाएगा जो उसे ''पिता'' कहते हैं (मत्ती 6:9)। दूसरी ओर, यदि हम अधिक ही परिचित हैं, तो हम उस स मान और श्रद्धा को जिसके वह योग्य हैं उसे नहीं दे पाएंगे। इब्रानियों के लेखक ने कहा है, ''इस कारण ... हम *भक्ति, और भय सहित,* परमेश्वर की ऐसी आराधना करें जिससे वह प्रसन्न होता है'' (इब्रानियों 12:28)। वारेन वियर्सबे ने यह सुझाव दिया है:

> कलीसिया को जिस बात की आवश्यकता है वह मसीह और उसकी महिमा की नई जागरूकता है। हमें उसे ''बहुत ही ऊंचे सिंहासन पर'' (यशायाह 6:1) देखना चाहिए। आज हमारी सभाओं में भय और आराधना का न होना खतरनाक है। हम टूटकर उसके कदमों में गिरने के बजाय, अपने पैरों पर खड़े होने की शेखी मारते हैं।[48]

कुछ लोग सामर्थी प्रभु के इस विचार से बेचैन हो जाते हैं कि वह दुष्टों को दण्ड देता है। उन्हें यहूदी बढ़ई, कमज़ोर सा गलीली, सीधा साधा चरवाहा अच्छा लगता है। जब आपके जीवन में बुराई आती है जब संसार आपके विरुद्ध हो जाता है और आशाएं खिड़की में से कूद जाती हैं, तो आपको किसी ऐसे की आवश्यकता है जो आपकी समस्याओं को अपके मन की पीड़ा को जानता है, ऐसा कोई व्यक्ति जिसके पास इन सब का समाधान करने की शक्ति है! प्रकाशितवाक्य 1:9-20 कहता है कि जिसकी हमें आवश्यकता है, वह यीशु ही है!

सारांश

मेरी प्रार्थना है कि इस अध्ययन से आप दानिय्येल द्वारा वर्णित ''मनुष्य के पुत्र के समान कोई'' को और अच्छी तरह समझ पाएं। यीशु के अन्य चित्रण प्रकाशितवाक्य की पुस्तक में मिलते हैं (5:6, 7; 12:1-6; 14:1, 14; 19:16; 22:12-17), परन्तु कोई भी अध्ययन 1 के दर्शन जितना विस्तृत कोई नहीं है, जिसने उसकी महिमा, उसकी शान और उसकी सामर्थ को दिखाया गया है!

कांस्टेनटाइन का एक भतीजा जूलियन (जिसे विश्वास से फिरने वाला कहा जाता है), मसीही परिवार में पला बढ़ा था; परन्तु जवानी में उसने अपने मसीही विश्वास का त्याग करके मूर्तिपूजा को अपना लिया। उसने मसीहियत को मिटाना अपने जीवन का लक्ष्य बना लिया। फारस के विरुद्ध अपने एक अभियान के दौरान, 363 ईस्वी में उसकी सेना के एक सिपाही ने एक मसीही सिपाही से जिसे ठट्ठा किया जा रहा था, पूछा, ''अब तु हारा वह बढई कहां है?'' उस मसीही का उत्तर था, ''वह तु हारे सम्राट का कफ़न तैयार कर रहा है।'' कुछ माह बाद, जूलियन युद्ध में ज़ मी हो गया। जब वह मरने पर था, तो उसने अपनी आंखें आकाश की ओर उठाईं और पुकारा, ''हे गलीली, तू जीत गया!''[49]

विश्वास से फिरने वाले जूलियन की तरह न बनें; यीशु को प्रभु मानने के लिए मृत्यु की प्रतीक्षा न करें। उसके सामने *अभी* झुक जाएं, आज ही उसे अपने जीवन का प्रभु मान लें (मत्ती 10:32) और प्रतिदिन उसके लिए जीने का निश्चय कर लें![50]

शिक्षकों तथा प्रचारकों के लिए नोट्स

पाठ में इस दर्शन के कलाकार का निमंत्रण दिया गया है। सिखाने के लिए इस्तेमाल में लाने के लिए आप इसे बड़ा कर सकते हैं। सिखाते समय बोर्ड पर एक आसान रेखाचित्र भी बनाया जा सकता है।

यदि आप चकित हों कि यीशु के बायें हाथ में कुंजी का अर्थ क्या है, तो 1:18 कहता है कि उसके पास ''मृत्यु और अधोलोक की कुंजियां'' हैं, जबकि 3:7 उसे ''दाऊद की कुंजी'' लिए हुए के रूप में दिखाता है।

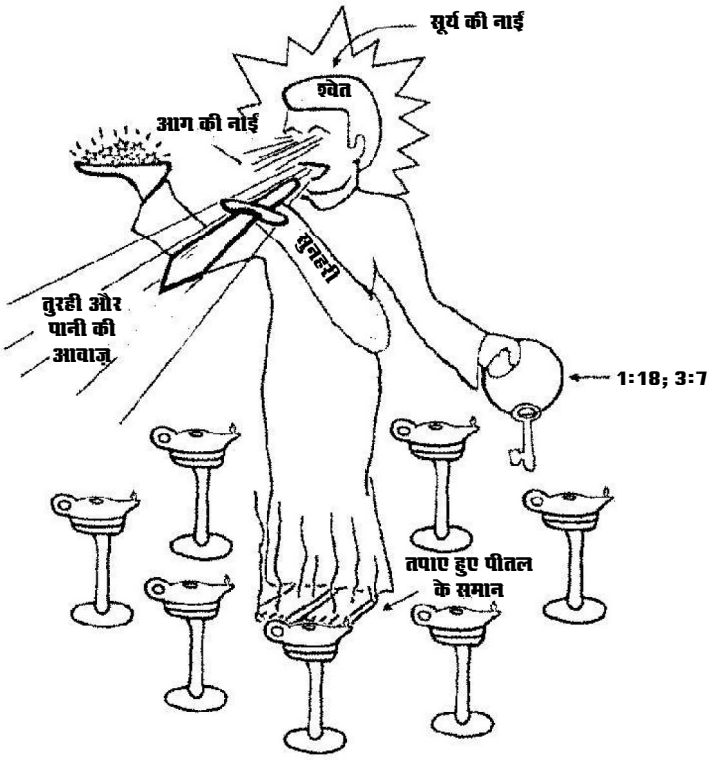

टिप्पणियां

[1]दर्शन का मूल अर्थ वही है जो दानिय्येल 2 में नबूकदनेस्सर के स्वप्न का है कि रोमी राजाओं के दिनों में, यीशु ने अपनी कलीसिया स्थापित करनी थी (''राज्य जो कभी नष्ट नहीं होगा'' जो ''सदा तक रहे'' गा; दानिय्येल 2:44; देखें दानिय्येल 7:15-18, 27)। परन्तु इस अध्ययन में हमारी दिलचस्पी ''मनुष्य के पुत्र सा कोई'' के विवरण पर है। [2]NASB में टिप्पणी देकर कहा गया है, ''Or, *the son of man*'' [3]राबर्ट माउंस, नोट्स ऑन द बुक ऑफ़ रैवलेशन इन *द NIV स्टडी बाइबल,* सामा. संस्क. कैनथ बार्कर (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: ज़ौंडरवन पब्लिशिंग हाउस, 1985), 1926. [4]विलियम बार्कले, *द रैवलेशन ऑफ़ जॉन,* अंक 1, संशो. संस्क., द डेली स्टडी बाइबल सीरीज़ (फिलाडेल्फिया: वेस्टमिंस्टर प्रैस, 1976), 40. [5]यह कितना अजीब है कि कुछ लोग दावा करते हैं कि राज्य अभी आया नहीं है! ''यूहन्ना और उसके समकालीन भाई 'राज्य' की प्रतीक्षा करने वालों के बजाय राज्य में थे'' (रूबल शैली, *द लै ब एण्ड हिज़ एनिमीज़: अंडरस्टैंडिंग द बुक आफ़ रैवलेशन* [नैशविल्ले: ट्वंटियथ सैंचुरी क्रिश्चियन फाउंडेशन, 1983], 23)। [6]''धीरज'' का अर्थ ''धीरज से सहना'' है। [7]कुछ लोगों का विश्वास है कि यूहन्ना द्वारा ''था'' का इस्तेमाल (भूतकाल) यह सिद्ध करता है कि वह टापू पर नहीं था, बल्कि प्रकाशितवाक्य की पुस्तक के लिखे जाने के बाद वह इफिसुस में आ गया था। हो सकता है, परन्तु यूनानी शब्द के अनुवाद ''था'' का मूल अर्थ ''आया'' है। यूहन्ना अपने पाठकों को बता रहा था कि वह किस प्रकार पतमुस पर ''आया।'' इस पद में यह पता नहीं चलता कि वह वहां था या नहीं। [8]डॉन शैकलफोर्ड, ''फोरवर्ड,'' *हार्डिंग यूनिवर्सिटी लैक्चर्स* (1992): 5. [9]''परमेश्वर के वचन और यीशु की गवाही के कारण'' वाक्यांश का अर्थ यह भी हो सकता है कि यूहन्ना वहां प्रचार करने के लिए गया या वह वहां प्रकाशन लेने के लिए गया, परन्तु प्रकाशितवाक्य में इस वाक्यांश के अन्य उपयोग (6:9; 20:4) सताव के विचार से स बन्धित हैं। [10]''प्रभु का दिन'' शब्द को ''प्रभु के उस दिन'' से नहीं उलझाना चाहिए जिसका इस्तेमाल पूरी बाइबल में परमेश्वर के न्याय के दिन के लिए और अक्सर अन्तिम दिन के लिए किया गया है (यशायाह 2:12; योएल 2:31; यूहन्ना 8:56)।

[11]वाल्टर बाउर, *ए ग्रीक-इंग्लिश लैक्सिकन ऑफ़ न्यू टैस्टामेंट एण्ड अदर अरली क्रिश्चियन लिटरेचर,* चौथा संशो. संस्क., सं. विलियम एफ़. अर्ड्ट और एफ़. विल्बर गिंगरिक (कै बरिज: यूनिवर्सिटी प्रैस, 1952), 459. [12]आरं भक लेखकों का नमूना जो सप्ताह के पहले दिन को प्रभु का दिन कहते थे, होमेर हेली, *रैवलेशन: एन इंट्रोडक्शन एण्ड कमैंट्री* (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: बेकर बुक हाउस, 1979), 107. [13]सैवंथ डे एडवेंटिस्ट लोग मरकुस 2:28 को ''मनुष्य का पुत्र सब्त के दिन का भी स्वामी'' को गलत पढ़कर उसका अर्थ सातवां दिन बताने की कोशिश करते हैं। वास्तव में इस पद में ज़ोर दिया गया है कि यीशु सब्त *सहित हर* दिन का प्रभु है। प्रकाशितवाक्य में ''प्रभु का दिन'' यूनानी और हिन्दी दोनों में मरकुस 2:28 वाले इस्तेमाल से अलग है। प्रकाशितवाक्य 2:10 में ''प्रभु का दिन'' स्थानीय [अंग्रेजी या हिन्दी-अनुवादक] भाषा में मरकुस 2:28 में इस्तेमाल हुए शब्द से अलग है। [14]मत्ती 22:43 एक और आयत है, जिसमें ''आत्मा में'' का था। इस वाक्यांश का अनुवाद केवल ''आत्मा में'' हो सकता है और इसका अर्थ यूहन्ना की मानसिक स्थिति हो सकता है। यूहन्ना 4:24 हमें ''आत्मा से'' आराधना करने को कहता है और उसी यूनानी शब्द का इस्तेमाल करता है जिसका प्रकाशितवाक्य 1:10 में किया गया है। इस प्रकार ''आत्मा में'' का अर्थ यही हो सकता है कि यूहन्ना प्रभु के दिन *आराधना कर रहा* था। ''आत्मा में'' का अर्थ जो भी हो, विचार यही है कि यूहन्ना उस प्रकाशन को जो मिलने वाला था *ग्रहण करने को* तैयार था। [16]इसी प्रकार, प्रार्थना के पतरस के समय ने उसे मिलने वाले दर्शन को ग्रहण करने के लिए तैयार किया (प्रेरितों 10:9, 10)। [17]यह पद विलियम हैंड्रिक्सन, *मोर दैन कंकरर्स* (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: बेकर बुक हाउस, 1954), 70 से लिया गया था। [18]ध्यान दें कि यह तुरही की आवाज़ नहीं थी, बल्कि तुरही की *आवाज़ जैसी* कोई और आवाज़ थी। इसे मन में अलग कर लें क्योंकि प्रकाशितवाक्य में हमें यह बार-बार मिलेगी। [19]तुरहियों का इस्तेमाल महत्वपूर्ण घटनाओं की ओर ध्यान दिलाने के लिए प्राचीनकाल से होता आया है। तुरहियों के पुराने नियम के इस्तेमाल के लिए, देखें गिनती 10 अध्याय। [20]च्छङ्क में संदेश का आर भ ''मैं अल्फा और ओमेगा, प्रथम और अन्तिम

हूं'' शब्दों से करने के द्वारा यह दिखाया गया है कि बोलने वाला यीशु था (देखें आयत 17)। ये शब्द मूल हस्तलिपियों में नहीं मिलते और इस कारण ह्रस्क्तथा कई अन्य नये संस्करणों में नहीं हैं। परन्तु आवाज़ स भवतया यीशु की ही *थी* क्योंकि मुड़ने पर यूहन्ना ने यीशु को ही देखा था और उसके शीघ्र बाद यीशु ने उसे लिखने की आज्ञा दी।

[21]मूलत:, यह कहता है, ''एक लपेटवीं पत्री पर लिख'' (NIV)। पृष्ठों वाली पुस्तकों का आविष्कार दूसरी शताब्दी तक नहीं हुआ था। [22]यह समूहों में विभाजन करना नहीं था। इस पुस्तक में पहले आया ''आसिया की सात कलीसियाएं और पतमुस टापू'' वाला मानचित्र देखें। इफिसुस से, तट के साथ-साथ होते हुए आप स्मुरने को जाते, फिर दूर उत्तर में पिरगमुन को। पिरगमुन से आप थुआतीरा में लौटते। थुआतीरा से दक्षिण की ओर सरदीस में, फिलाडेल्फिया और वापस लौदीकिया में आते। लौदीकिया से आप पश्चिम में इफिसुस की ओर जा सकते थे। चक्र स पूर्णता का प्रतीक है, सो रुक-रुक कर बना यात्रा का चक्र यह प्रमाण हो सकता है कि ये सात कलीसियाएं उस समय और आज की *सभी* कलीसियाओं का प्रतिनिधित्व करती हैं। [23]इसका अर्थ केवल यह है कि ''मैं यह देखने के लिए मुड़ा था कि कौन बोल रहा है।'' [24]KJV में ''कैंडलस्टिक'' है, परन्तु यूहन्ना द्वारा प्रकाशितवाक्य लिखने के कई साल बाद तक मोमबत्तियों का आविष्कार नहीं हुआ था। [25]हम जानते हैं कि यह यीशु ही था, क्योंकि आयत 18 में उसने कहा, ''मैं मर गया था और अब देख मैं युगानुयुग जीवता हूं।'' 2:18 में उसने अपने आप को ''परमेश्वर का पुत्र'' कहा। [26]यह ढंग हर पाठ में अलग होगा, परन्तु किसी दर्शन पर चर्चा किए जाने के समय यहां दिए गए तीन पग आम तौर पर पाठ में *कहीं* मिल ही जाएंगे। [27]उदाहरण के लिए, एक जगह समुद्र से निकलने वाले पशु के सात सिर बताए गए (13:1), परन्तु एक और पद में उसका केवल *एक* मुंह (16:13) था। [28]अध्याय 1 में ''मनुष्य के पुत्र सा कोई'' ''दीवटों के बीच में'' खड़ा दिखाया गया है (आयत 13)। दूसरी ओर, अध्याय 2 यह बल देता है कि वह ''सोने की सातों दीवटों के बीच में *फिरता है*'' (आयत 1)। [29]*द होली बाइबल: द न्यू टैस्टामेंट इन मॉडर्न स्पीच,* सं. रिचर्ड एफ़. वे माउथ। *द न्यू टैस्टामेंट फ्रॉम 26 ट्रांसलेशन्स* (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: ज़ौंडरवन पब्लिशिंग हाउस, 1967) में उद्धृत। [30]यूनानी शब्द का अनुवाद ''तलवार'' छोटी रोमी धार (machaira) या ल बी, पतली तेग के लिए नहीं, बल्कि thracia (*rhomphia*) में बनी युद्ध की भारी तलवार के लिए था।

[31]इससे जुड़ा शब्द ''अधिकार'' है। [32]हमें और संकेत मिलते हैं कि पहले दर्शन की हर बात महत्वपूर्ण है: यह बात कि यीशु ने दो प्रतीकों की व्या या की, उनके महत्व को बढ़ा देती है। इसके अलावा दीवटों के प्रतीक का इस्तेमाल 2:5 की चेतावनी में किया गया है। [33]इस प्रकार यीशु ''दीवटों के बीच में'' (आयत 13) खड़ा होने के योग्य था। [34]यह प्रासंगिकता बनाई जा सकती है: दीवट *स्थानीय मण्डलियां* हैं। यदि हम अपने प्रकाश को चमकाना चाहते हैं, तो हमारे लिए स्थानीय मण्डली के सक्रिय सदस्य होना आवश्यक है। स्थानीय स्वायत्तता के बारे में एक और सच्चाई सिखाई जा सकती है: एक-एक दीवट यह याद दिलाता है कि प्रत्येक मण्डली अलग और स्वतंत्र अर्थात केवल यीशु को जवाबदेह है। [35]यह सही है कि यीशु ने सात में से पांच मण्डलियों को झाड़ा, परन्तु यदि उसे उनकी चिंता न होती, तो वह उनकी परवाह न करता। [36]नये नियम में यीशु का केवल यही विवरण है और यह मूल नहीं है। [37]काम करने वाले लोग कपड़े या चमड़े की पेटी से *कमर* पर कसा छोटा वस्त्र पहनते थे। यीशु ने *छाती* ढांपने वाला वस्त्र पहना था। कुछ टीकाकार आयत 13 में महायाजक के वस्त्र का विवरण देखते हैं (आयत 13 की तुलना निर्गमन 28:4, 39; 29:5; लैव्यव्यवस्था 16:4 से करें)। [38]यूनानी शब्द का अनुवाद ''पीतल'' एक मिश्रित शब्द है जिसमें ''तांबा'' के लिए शब्द है, परन्तु यह स्पष्ट नहीं है कि यहां कौन सी ता बे की धातु है। पीतल मु यतया ता बे और जिंक से बनी धातु है। कांस्य मु यतया ता बे और टिन से बनी धातु है। पीतल और कांस्य दोनों ही सामर्थ और स्थिरता के लिए जाने जाते हैं (क्योंकि उन्हें जंग नहीं लगता)। [39]यूनानी शब्द *aggelos* है। दो यूनानी अक्षरों *gammos* (gओं) को साथ-साथ रखने पर, पहले का उच्चारण यूनानी अक्षर *nu* (न की आवाज़) देता है। [40]कुछ टीकाकार ''सांसारिक दूत'' और ''स्वर्गीय दूत'' शब्दों का इस्तेमाल करते हैं।

[41]उदाहरण के लिए, 2:1, 2 में यीशु ने कहा, ''*इफिसुस की कलीसिया के दूत* को लिख: ... मैं *तेरे* काम और *तेरे* परिश्रम ... को जानता हूं।'' यूनानी शब्द का अनुवाद ''तेरे'' एक वचन में है, बहुवचन में

नहीं। कुछ लोगों का सुझाव है कि यह संरक्षक स्वर्गदूतों की बात है जो मण्डलियों के लिए ज़िमेदार थे। बाइबल यह सुझाव देती है कि स्वर्गदूत लोगों पर ठहराए हुए हैं, परन्तु पवित्र शास्त्र स्वर्गदूतों के प्रत्येक मण्डली के दिए जाने के बारे में कुछ नहीं कहता। [42]सा प्रदायिक कलीसियाओं के टीकाकारों को यह कहना अच्छा लगता है कि प्रत्येक मण्डली का ''दूत'' उसका ''पास्टर'' या ''बिशप'' था, परन्तु नये नियम के समयों में आज की सा प्रदायिक कलीसियाओं वाले एक-पास्टर/एक-बिशप की बात का किसी को पता नहीं था। [43]कुछ लोगों का सुझाव है कि प्रत्येक दूत मण्डली के *ऐल्डरों* को कहा गया है। [44]इसका अर्थ यह नहीं है कि मसीही व्यक्ति ''अनुग्रह से गिर'' नहीं सकता। यूहन्ना 10:28 और इसके जैसे पदों से पता चलता है कि परमेश्वर क्या कर सकता है, न कि यह कि मनुष्य क्या कर सकता है। बाइबल आज भी यही कहती है, ''इसलिए जो समझता है, मैं स्थिर हूं, वह चौकस रहे कि *कहीं गिर न पड़े*'' (1 कुरिन्थियों 10:12)। [45]प्रकाशितवाक्य 1 अध्याय में ''तलवार'' के लिए यूनानी शब्द इफिसियों 6 और इब्रानियों 4 में ''तलवार'' वाला शब्द ही नहीं है। यह प्रकाशितवाक्य में वचन के अलग उद्देश्य के कारण हो सकता है। तौ भी वचन का तलवार के रूप में रूपक वही है। [46]4:10 में चौबीस लोग परमेश्वर की आराधना करने के लिए उसके सामने गिरते हैं, पर यूहन्ना से कहे यीशु के शब्दों (''मत डर'') का यह संकेत है कि डरकर वह मूर्छित होने को था। [47]यूजीन एच. पीटरसन, *रिवर्सड थंडर* (सैन फ्रैंसिस्को: हार्परकोलिंस पब्लिशर्स, 1988), 32. [48]वारेन डब्ल्यू वियर्सबे: *द बाइबल एक्सपोज़िशन कमैंट्री,* अंक 2 (व्हीटन, इलिनोइस: विक्टर बुक्स, 1989), 570. [49]यह कहानी थियोडोरेट, *चर्च हिस्टरी* 3.20 में मिलती है। [50]यदि इस पाठ का इस्तेमाल प्रवचन के रूप में करना हो, तो गैर मसीहियों को बपतिस्मा लेने की आवश्यकता (मरकुस 16:16; प्रेरितों 2:38) और अविश्वासी मसीहियों को प्रभु के पास वापस आने की आवश्यकता बता दें (गलातियों 6:1; प्रेरितों 8:22; याकूब 5:16)।

विचार एवं चर्चा के लिए प्रश्न

1. पुराने नियम के किस नबी ने ''मनुष्य के पुत्र के समान कोई'' का दर्शन देखा था?
2. ''मनुष्य के पुत्र के समान कोई'' कौन था?
3. यूहन्ना पतमुस के टापू पर क्यों था? क्या आपको ''परमेश्वर के वचन और यीशु की गवाही के कारण'' कभी सताव झेलना पड़ा है? क्या आप किसी को जानते हैं जिसने यह सताव सहा हो? आपको उस सताव के बारे में कैसा महसूस होता है?
4. ''प्रभु का दिन'' शब्द से आप क्या समझते हैं?
5. आपको क्या लगता है कि ''आत्मा में'' कहने से यूहन्ना का क्या अभिप्राय था?
6. इस पुस्तक में दिए गए मानचित्र पर आसिया की सात कलीसिाएं ढूंढ़ें।
7. अध्याय 1 में दिए गए दर्शन का रेखाचित्र बनाने की कोशिश करें।
8. 1:12-19 में यीशु के चित्रण को पढ़कर आप पर क्या प्रभाव पढ़ता है?
9. क्या अध्याय 1 वाले दर्शन की *बातें* महत्वपूर्ण हैं? क्या यह दर्शनों के विवरणों के स बन्ध में नियम है या अपवाद?
10. दर्शन में, सोने के सात दीवटों का क्या अर्थ है?
11. जिस मण्डली में आप आराधना करते हैं चाहे वह छोटी भी क्यों न हो, क्या वह फिर भी यीशु के लिए महत्वपूर्ण है?
12. यीशु के अनुसार, सात तारों का क्या अर्थ है?

13. ''दूत'' शब्द का शाब्दिक अर्थ क्या है ?
14. कलीसिया के तारों/दूतों के कुछ स भावित अर्थों पर चर्चा करें। पाठ के अनुसार, यीशु के दाहिने हाथ में तारे होने का क्या अर्थ है ? क्या आप इस संकेत की अन्य स भावित प्रासंगिकताओं पर विचार कर सकते हैं ?
15. पाठ के अनुसार, पूरे दर्शन का क्या अर्थ है ? दर्शन में आपको और क्या संदेश लगते हैं ?
16. कौन से दो चरम हैं, जिनसे प्रभु की उपस्थिति में आने के समय बचने की आवश्यकता है ?

पतमुस के टापू पर यूहन्ना (1:9)

दीवटों के बीच चलते हुए यीशु का दर्शन (1:12-16)